ॐ श्रीगणेशाय नमः

ॐ अथ शिवतांडवो लिख्यते

लि॰ [illegible]

[illegible] विद्यामन्दिर
[illegible]प्रयाग [illegible]

सं॰ १९४४ [illegible] शु॰ २ मंगल॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ओ३म्

ओं श्रीगणेशाय नमः॥ अथ शिवताण्डवो लिख्यते
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलो
लवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि धगद्धगद्धग
ज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः
प्रतिक्षणं मम॥१॥ धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धु
बन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे कृपाकटा
धोरणीनिरुद्धदुर्द्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनोविनोदवसुनि॥२॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रव
प्रलिप्तदिग्वधूमुखे मदान्धसिन्धुरासुरत्वगुत्तरीयमेदुरे मनोवि
नोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥३॥ ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलि
ङ्गया निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकं सुधामयूखरेखया
विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥४॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधू
सराङ्घ्रिपीठभूः भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रिये
चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥५॥ करालभालपट्टि
काधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ध
राधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलो
चने रतिर्मम॥६॥ नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्द्धरस्फुरत्कु
हूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु
कृत्तिसुन्दरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥७॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलं
कण्ठकन्दलीरुचिप्रबन्धकन्धरं स्मरछि
दम्पुरछिदम्भवछिदम्मखछिदङ्गजछिदा
न्धकछिदन्तमन्तकछिदम्भजे।।९।।अख
र्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाह
माधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्। स्मरान्तकम्पु
रान्तकम्भवान्तकम्मखान्तकङ्गजान्तकान्धक
कान्तकन्तमन्तकान्तकम्भजे।।१०।।जयत्व
दभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमक्र
मस्फुरत्करालभालहव्यवाट्धिमिद्धिमिद्धिमि
ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्र
वर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।११।।दृषद्वि
चित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठर
त्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः तृणारविन्दच
क्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृ
कः कदा सदाशिवं भजाम्यहं।।१२।।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

५८२८
शि०।शि
४१

लिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्मतिस्सदाशि
रस्थमञ्जलिम्वहन् विलोललोललोचनाललामभाललग्नकंशिवेति
मन्त्रमुच्चरन्सदासुखी भवाम्यहं॥१२॥ निलिम्पनाथना
गरीकदम्बमौलिमल्लिकानिगुम्फनिर्भरहरन्सधूष्णि
कामनोहरः तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनीमहर्निशं परश्रियः परम्प
दं तदङ्गजत्विषां चयः॥१३॥ प्रचण्डवाडवानलप्रभा
शुभप्रचारिणी महाष्टसिद्धिकामिनीजनाव
हूतजल्पनाविमुक्तवामलोचनाविवाह
कालिकध्वनिशिवेतिमन्त्रभूषणाजग
ज्जयायजायतां॥१४॥ इति श्री दश
वदनकृतशिवताण्डवः समाप्तः [illegible]
॥सम्वत्॥१८४७॥विक्रमादित्यराज्ये
शु फाल्गुनेमासेक्लेपक्षे शुभतिथौ तृती
यां॥३॥ मङ्गलदिने तेलूरामहसाहर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तेलू रामने लिखा

مالک این کتاب تیلو رام ولد روپ چند قوم کھتری

इति श्री शिव तांडवः समाप्तः

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri